मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh ISSN:2456-2904

भारतीय कृषि की विशेषताएँ,समस्याएँ और चुनौतियाँ

[1]राजेश कुमारी, [2]गोविन्द कुमार बागड़ी, [3]सुनिता चौधरी ओर राहुल कुमार शर्मा[1]
[1]डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट प्रोटेक्शन , फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज , अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश , इंडिया–202002
[2]डिपार्टमेंट ऑफ सॉइल साइंस एंड एग्रीकल्चरल केमिस्ट्री, आईएएस, बी एच यू, वाराणसी–221005, इंडिया
[3]डिपार्टमेंट ऑफ एग्रोनोमी, इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज (आईएएस), बी एच यू, वाराणसी–221005, इंडिया
Email: kumarirajesh001@gmail.com

परिचय

प्राकृतिक भौगोलिक विविधताओं के बावजूद भी हमारा देश कृषि प्रधान है। देश कि लगभग 2/3 जनसँख्या आज भी प्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आश्रित है इसके बावजूद सकल घरेलु उत्पाद में कृषि का योगदान लगातार कम होना चिंतनीय है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कृषि व किसान देश कि अर्थव्यवस्था के ऋण है अर्थव्यवस्था में इन्हे इनकी वाजिब जगह दिलाने के लिए वर्तमान में सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए है। किसानो कि आमदनी बढ़ाने लिए फसलों कि उत्पादकता बढ़ाने के साथ–साथ पशुपालन बागवानी व मछलीपालन को भी बढ़ावा देने कि दिशा में भी पहल की जा चुकी है। इस कदम से लघु एवं सीमांत भूमिहीन किसानों को काफी फायदा पहुंचने की उम्मीद है। बागवानी फसलों की खेती के विकास लिए चमन नाम की योजना के साथ ही पशुओं की देशी नस्ल में सुधार के लिए राष्ट्रीयगोकुल मिशन शुरू किया गया है।मासकीय क्षेत्र को आगे ले जाने के लिए नीली क्रांति योजना चलाई जा रही है। इससे मछुआरों महिला मछुआरों तथा जल कृषि से किसानों की आजीविका में सुधार होगा साथ ही इससे ग्रामीण इलाकों में जहाँ की आबादी में प्रोटीन की कमी है उसकी भी भरपाई हो सकेगी।

कृषि विकास व किसान हित में सरकार ने मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना हर खेत तक पहुंचाने के उद्देश्य से शुरू की गयी है। प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना, परम्परागत कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत जैविक खेती को बढ़ावा देना, किसानों को उनके उत्पादों के बेहतरमूल्य प्राप्त हो इसके लिए एग्रीटेक इंफ्रास्ट्रक्चर फण्ड, संगठित राष्ट्रीय कृषि मंडी से उन्हें जोड़ने जैसी कई महत्वकांशी योजनाएं क्रियान्वित की गयी हैं।

कृषि तकनीक में हो रही प्रगति प्रयोगशालाओं तक ही सीमित न रहे इसके लिए लैब टू लैंड मिशन को सफलता पूर्वक पूरा करने के लिए हर पंचायत स्तर पर भूमि जांच प्रयोगशालाए स्थापित करने के प्रयास कियेजा रहे हैं। इसके लिए कृषि प्रसार के यंत्रो जैसे कृषि विज्ञान केंद्रों तथा राज्यों के बीच सामंजस्य बना कर नई तकनीकों को किसानों के खेतों तक पहुँचाया जा रहा है। युवाओं को कृषिकार्यों से जोड़ने के लिए आर्य नामक योजना भी शुरू की गयी है। वहीं वृद्धा अवस्था के लिए अटल पेंशन योजना की शुरुआत की जा चुकी है।

इसमें कोई संदेह नहीं है की कृषि में ढांचागत सुधार लाये बगैर दीर्घकालिक एवं स्थायी प्रगति सम्भव नहीं है। इस लक्ष्य की प्राप्ति की और भी सरकार प्रयास कर रही है। कृषि के हर क्षेत्र अर्थात कृषि शिक्षा, शोध व प्रसार के शुद्धिकरण हेतु कार्यक्रम चलाएं जा रहे हैं। कृषि क्षेत्र में शोध के लिए दो नए राष्ट्रीय कृषि अनुसन्धान संस्थानों के स्थापना के प्रावधान के साथ चार नए कृषि विश्विद्यालयों की स्थापना की जा रही है। इसके साथ ही तीन केंद्रीय कृषि विश्विद्यालयों के अंतर्गत कई नएं कृषि महाविद्यालय खोले जाने के कार्य में तेजी लायी जा रही है।

भारतीय कृषि की विशेषताएं–

1. निम्न उत्पादकता	2. छिपी हुई बेरोजगारी	3. वर्षा पर निर्भरता	4. निर्वाह खेती
5. परम्परागत आगतें	6. लघु जोतें	7. पिछड़ी तकनीक	

यद्यपि कृषि के विकास के लिए बहुत अधिक प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन संसार के विकसित देशों की तुलना में हमारी कृषि की उत्पादकता अब भी कम हैं, इस परिस्थिति के लिए अनेक कारक जिम्मेदार हैं। इनको चार वर्गो में बाटा गया है, पहला पर्यावरणीय, दूसरा आर्थिक, तीसरा संस्थागत तथा चौथा प्रौद्योगिकी ।

पर्यावरणीय कारक– सबसे गंभीर समस्या मानसून का अनिश्चित स्वरूप है, तापमान तो सारे साल ही ऊँचा रहता है, अतः यदि नियत रूप में जल की पर्याप्त आपूर्ति होती रहे तो पुरे वर्ष फसले पैदा की जा सकती है, लेकिन ऐसा संभव नहीं है। देश के अधिकतर भागों में वर्षा केवल तीन या चार महीनो में ही होती है। यही नहीं वर्षा की मात्रा तथा ऋतुनिष्ट और प्रादेशिक वितरण अत्यधिक परिवर्तनशील है। इस परिस्थिति का कृषि के विकास पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। जहाँ तक वर्षा का सम्बन्ध हैं देश के अधिकतर भाग उपआद्र, अर्धशुष्क और शुष्क है। इन क्षेत्रों में अक्सर सूखा पड़ता रहता है। सिंचाई की सुविधाओं के विकास और वर्षा जल संग्रहड के द्वारा इन प्रदेशों की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

आर्थिक कारक– कृषि में निवेश जैसे अधिक उपज देने वाले बीज उर्वरक आदि और परिवहन की सुविधाएं आर्थिक कारक है, सुविधाओं की कमी या उचित ब्याज पर ऋण न मिलने के कारण किसान कृषि के विकास के लिए आवश्यक संसाधन नहीं जुटा पाता इसका परिणाम होता है निम्न उत्पादकता। सच्चाई तो ये है की भूमि पर जनसँख्या का दबाव दिनोदिन बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति फसलगत भूमि में कमी हो रही है। जोतो के छोटे होने के कारण निवेश की क्षमता भी कम है।

संस्थागत कारण– जनसंख्या के दवाब के कारण जोतो का उपविभाजन अर्थात पीढ़ियों के अनुसार बटवारा और छितराव हो रहा है। इन छोटी जोतो में भी छोटे छोटे खेत दूर दूर बिखरे हैं। जोतों का अनार्थिक होना अर्थात आर्थिक दृष्टि से अनुपयुक्त आकार कृषि के आधुनिकीकरण की प्रमुख बाधा है। भूमि के स्वामित्व की व्यवस्था बड़े पैमाने पर निवेश के अनुकूल नहीं है। क्योंकि काश्तकारी की अवधि अनिश्चित बनी रहती है।

प्रौद्योगिकीय कारक– कृषि के तरीके पुराने और अक्षम है आज भी किसान लकड़ी का हल और बैलों का उपयोग करते हैं। मशीनीकरण बहुत सीमित है तथा उर्वरकों और अधिक उपज देने वाले बीजो का उपयोग भी सीमित है। फसलगत क्षेत्र के केवल एक तिहाई क्षेत्र के लिए ही सिंचाई की सुविधाएं जुटाई जा सकी हैं। इसका वितरण वर्षा की कमी और परिवर्तनशीलता के अनुरूप नहीं है। ये दशाएँ कृषि की उत्पादकता और इसकी गेरिथा को निम्न स्तर पर बनाएं हुए है।

भूमंडलीयकरण पर भारतीय कृषि– किसी देश की अर्थव्यवस्था का संसार की अर्थव्यवस्था के साथ समन्वय ही भूमण्डलीयकरण है। भूमण्डलीयकरण के द्वारा भारतीय बाजार संसार के लिए खुल गए है। इसके द्वारा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सरकारी नियंत्रण कम हुआ है। तथा आयात और निर्यात से सम्बंधित नीतियों में उदारता आ गयी है। अब कृषि उत्पादों समेत अन्य विदेशी उत्पादों का भारत में आयात किया जा सकता है। भारत भी कुछ उत्पाद अन्य देशों को भेज सकता है। बंधन मुक्त व्यापार में वस्तु की कीमत और गुणवत्ता प्रतिस्पर्धात्मक हो जाती है। यदि किसी फसल की लागत ऊंची है तो व्यापारी इसे कम कीमत पर अन्य देशों से आयात करके राष्ट्रीय बाजार में बेच सकते हैं, इससे भारतीय कृषि में गतिहीनता आ सकती है तथा ये पिछड़ भी सकती है या अवनति भी हो सकती है। इस निति का स्वाभाविक तकाजा है की विभिन्न फसलों की उत्पादन लागत घटाई जाएं ये न केवल विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा का सामना कर सके अपितु दूसरों से बढ़कर हो तभी भारतीय कृषि अपने वर्तमान रूप में विकसित देशों की अत्यधिक पोषित और संवर्धित कृषि का मुकाबला कर सकेगी उनका प्रति हेक्टेयर उपज हमारे देश की उपज से बहुत अधिक है। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अनेक उत्पादकों की कीमतें गिर रही हैं जबकि भारतीय बाजारों में ये बढ़ रही हैं। अन्तराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में गिरावट के दो कारण है। पहला जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तीव्र विकास जिसके परिणाम स्वरूप विकसित देशों में किसानो को अत्यधि उपज देने वाले बीज उपलब्ध कराएं जा रहे हैं। दूसरा परिष्कृत कृषि यंत्रो के उपयोग के द्वारा उत्पादन लागत काफी घट गयी है। इनके साथ–साथ विकसित देशों में किसानों को भारी अनुदान दिय जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन लागत घट जाती है। विश्व व्यापार समझौते के अनुसार सभी देशों को कृषि क्षेत्र में दिये जाने वाले भारी अनुदान बंद करने पड़ेंगे, अन्य देशों से आयात के मध्य दीवार बनकर खड़े सीमा शुल्क को नीचे लाना पड़ेगा , विश्व बाजार की प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए भारत को अपनी कृषि की विशाल सम्भावनाओ का व्यवस्थित और नियोजित तरीके से उपयोग करना होगा तथा हमे भी वैसी ही तकनीके विकसित करनी होंगी, जिनका उपयोग विकसित देश आजकल कर रहे है। जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग के

अलावा देश में कृषि उत्पादों के लिए एक बन्धन मुक्त और एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने का कार्य सही दिशा में उठाया गया कदम होगा । इस कदम को उठाने के लिए हमे सुगठितासरंचना की जरूरत होगी जिसमे किसानो और व्यपारियों क लिए सड़के बिजली सिंचाई और ऋण की सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

अन्य भारतीय कृषि की समस्याएं –

1. सिंचाई के स्थायी साधनों का अभाव	2. वित्तका अभाव	3. परम्परागत दृष्टिकोण
4. छोटी तथा बिखरी जोतें	5. शोषक कृषक संबंध	6. व्यवस्थित विपणन प्रणाली का अभाव

चुनौतियाँ

उपलब्धियों के बाद कई गंभीर चुनौतियाँ है इनसे निपटने के लिये केंद्र और राज्य सरकारों के साथ कृषि वैज्ञानिकों को बहुत कुछ करने की जरूरत है, गरीबी मिटाने और पोषण सुरक्षा को एजेंडे में खास जगह देनी चाहिए।

छोटा किसान ही भारत का भविष्य है, क्योंकि जोत जो है बढ़ने से रही और किसान का भरोसा अभी भी कृषि पर है। ग्रामीण क्षेत्रों में किसानो की ही प्रधानता है। अगर हमे देश में कृषि उत्थान करना है तो छोटे किसानों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। छोटा किसा तभी खुशहाल रह पायेगा जब अपनी जीविका अच्छे से चला पायेगा और अपने परिवार का खयाल तभी रख पायेगा जब उसकी शुद्ध आय अर्थात नेट इनकम बढेगी।

राज्य सरकार की प्राथमिकता किसानो की कृषि की, भूमि की, जल की, आमदनी की क्षमता को ध्यान में रखते हुएऔर जनसंख्या की इंसानियत पर मुनासिफ करती है। उसके अनुसार उनको अपनी नीति बनानी पड़ेगी।

सबसे महत्वपूर्ण नीति जो निर्धारित करनी हैं –

1. खाद्य सुरक्षा से सम्बन्धित है। 2. आय सुरक्षा भी अति आवश्यक है। 3. आजीविका सुरक्षा।

ये तीन मुख्या चुनौतियाँ है देश के विकास के लिए जिनपर ध्यान देने की अति आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त अनाज भंडारण की समस्या भी काफी बड़ी है। छोटा किसान उत्पादन तो कर लेता है पर वह भंडारण की समस्या से झूझ रहा है। भंडारण उत्पादन के नजदीक बनाकर उससे होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है। हर गाँवों में इंफ्रास्ट्रक्चर में बनाने की जरूरत है। प्रोक्योरमेंट किसान के खेत से करके सीधे भंडारण में लायें फिर धो कर ट्रांसपोर्ट के लिए पैकेजिंग करने के बाद बाजार से लिंक करें।कोल्ड भण्डारण ओर मार्केट से लिंक ट्रांसपोर्ट इन चीजो पर विशेष ध्यान दे ताकि हम पोस्ट हार्वेस्ट हानि से बच सकें। देश में उत्पादन तो है पर उसके वितरण के लिए साधन की कमी हैव एक अच्छे भविष्य के लिए नीड बेस्ड वितरण की जरूरत है।